हरित विकास और अक्षय ऊर्जा

पृष्ठभूमि

भारत का बिजली उत्पादन तकरीबन ३०० गीगावॉट है। इसमें से करीब ६० प्रतिशत कोयला आधारित बिजली संयंत्रों से उत्पादित होता है। कोयले की कमी, कच्चे तेल के गिरते बढ़ते दाम, प्रदूषण कम करने का वैश्विक दबाव, और सतत विकास को ध्यान में रखते हुए, अक्षय ऊर्जा का उपयोग अब आवश्यक होता जा रहा है। भारत में अक्षय ऊर्जा की कुल स्थापित क्षमता करीब ४३ गीगावाट है, जिसमे सौर, वायु, लघु पनबिजली एवं बायोमास शामिल है। ब्रिज टू इंडिया के मुताबिक भारत सरकार का सौर ऊर्जा से २०२२ तक १०० गीगावाट का अतिरिक्त उत्पादन मात्र एक सपना रहने की सम्भावना है, और वास्तविक अतिरिक्त उत्पादन तकरीबन ४०-६० गीगावाट होने की सम्भावना है।

एक तटस्थ साक्ष्य आधारित मंच की संरचना

भारत का हरित विकास बिना व्यापक समर्थन के संभव नहीं है। इसी सन्दर्भ में कट्स इंटरनेशनल, जयपुर, एवम फ्रेंड्रिच-ईबर्ट-स्टिफ्टुंग (एफईएस) जर्मनी, एक तटस्थ साक्ष्य आधारित मंच की संरचना में जुटे है, जो की इस क्षेत्र के सभी हितधारकों को साथ लाकर एक कार्य उन्मुख योजना बना सके। इसी विचार से ३० अप्रैल २०१६ को जयपुर में एक गोलमेज सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन के मुख्या वक्ता श्री राव राजेंद्र सिंह, माननीय उप सभापति, राजस्थान विधान सभा, थे।

सम्मेलन में राजस्थान की सौर ऊर्जा क्षमता चर्चा का विषय रही। राज्य इस समय निम्न चुनौतियों से गुज़र रहा है, जिनसे पार पाना अक्षय ऊर्जा के विकास के लिए आवश्यक है:

- सरकार का उदय योजना के अंतर्गत, बिजली वितरण कंपनियों का ऋण चुकाने का दायित्व उठाना - इस वजह से अक्षय ऊर्जा में निवेश करने में वित्तीय संसाधनों की कमी आना।
- अंतर्राष्ट्रीय बाजार में परंपरागत ऊर्जा के दाम में कमी आना और अक्षय ऊर्जा का परंपरागत ऊर्जा का विकल्प न बन पाना।
- ऊर्जा विभाग का कार्बन क्रेडिट का क्रय करने में योग्यता का आभाव।
- परियोजनाओं का तकनिकी, व्यवसायिक, एवम राजनितिक विश्लेषण का आभाव।
- बिजली वितरण कंपनियों का सौर ऊर्जा के प्रयोग में सीमित सहयोग।
- सौर रूफ टॉप की स्थापना और प्रबंधन में तकनिकी कमज़ोरी।
- मीडिया अभियान का आभाव।
- नीतिगत सुधारों की अनदेखी।

आगे की रणनीति

इन बिंदुओं को ध्यान में रखते हुए चहुमुखी रणनीति प्रस्तावित है:

- भविष्य के दृष्टिकोण की स्थापना।
- विभिन्न पृष्ठभूमियों के लोगो के दल का निर्माण जो अपने अपने क्षेत्र में उपर्युक्त दृष्टिकोण के अंतर्गत परियोजनओं को बढ़ावा दे सके।
- परियोजनाओं का तकनिकी, व्यवसायिक, एवम राजनितिक विश्लेषण।
- एक पृष्ठभूमि जो दृष्टिकोण को तर्कसंगत ठहरा सके।

सम्मेलन में दो मुख्य विषयों पर कार्य को आगे बढ़ने की सलाह दी गयी| ये विषय है सौर रूफ टॉप एवम ग्रामीण विद्युतीकरण| इन विषयों पर विशेषज्ञो से सलाह मश्वरा कर आगे काम बढ़ाया जायेगा|

****